'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १०९ | वाराणसी, गुरुवार, २४ सितम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

कटरा (जम्मू) ६-९-'५९

भारत का काम करने का अपना एक तरीका है !

अहिंसा से आजादी हासिल करना, आसन-प्राणायाम करना आदि अपने देश के तरीके हैं। वैसे ही भूदान भी अपने देश का एक भारतीय तरीका है। भूदान-आन्दोलन की बात, ग्रामदान की बात, प्यार से रहने की बात यहाँके लोगों की समझ में आती है, लेकिन यहाँ भी जो पश्चिम की विद्या सीखे हुए लोग हैं, वे इस तरीके को नहीं समझते। वे मुझे पूछते हैं कि बाबा, इस तरह घूमते रहोगे तो इस काम को सफल होने में कितने साल लगेंगे ? कल ही एक भाई ने ऐसा सवाल पूछा था। मैंने उसे कहा, कुण्डली देखो। अंग्रेजी पढ़े हुए लोग ही ऐसा पूछते हैं, लेकिन यहाँके लोग ऐसा नहीं पूछते, वे हमारी बात की असलियत समझते हैं।

केवल उपज का बढ़ना पर्याप्त नहीं

आज एक भाई ने कहा कि यहाँ अनाज कम है, इसलिए अनाज कैसे बढ़ाया जाय, आप यही बताइये। मैंने कहा, सिर्फ उपज बढ़े, इसमें मुझे दिलचस्पी नहीं है, मुझे दिलचस्पी तो इस बात में है कि हरएक शख्स अपने पास जो कुछ रखता है, पाता है या पैदा करता है, उसका एक हिस्सा दूसरे को दे। सभी मिल-कर काम करें, प्रेम से रहें, काम से जी न चुरायें ! मैं माली हालत के साथ-साथ अखलाकी ताकत बढ़ाना चाहता हूँ। इसलिए मैं कहता हूँ कि गाँव-गाँव में प्यार से रहना शुरू कर दें तो निश्चित ही उपज बढ़ेगी। मैं चाहता यह हूँ कि उपज के साथ नीतिमत्ता भी बढ़े, चारित्र्य भी बढ़े। इन्सान को अपनी इन्सानियत बनाये रखने के लिए नैतिक और चारित्रिक विकास ही सहायता देता है। केवल उपज बढ़ने से ही काम नहीं चलता। अखलाकी, नैतिक ताकत भी बढ़े, इसके लिए गाँव-गाँव में प्यार से रहना होगा। ऐसा होगा, तभी इन्सान की अखलाकी और चारित्रिक उन्नति होगी।

पश्चिम के पास बाइबिल

अमेरिका में अनाज की कोई कमी नहीं है। वह हिंदुस्तान के हिसाब से स्वर्ग ही है, लेकिन वहाँ भी पागलपन है, बीमारियाँ हैं, खुदकशी है, इसकी वजह यही है कि वहाँ माली तरक्की के साथ-साथ नैतिक, आध्यात्मिक तरक्की नहीं हुई। इस समय अमेरिका और यूरोप में अखलाकी ताकत बढ़ाने की बहुत जरूरत है। अखलाकी ताकत बढ़ाने का तरीका बाइबिल में बताया गया है। जो नसीहत हिंदुस्तान के धर्म-ग्रंथों में है, वही बाइबिल में है, लेकिन लोग समझते हैं कि उसका फायदा इस दुनिया को नहीं है। बाइबिल का उपयोग तो मुक्ति के लिए होगा, सिर्फ समाज के लिए नहीं, समाज के लिए तो शस्त्र की ही आवश्यकता है, ऐसा वे महसूस करते हैं। लेकिन मैं पूछना चाहता हूँ कि इन शस्त्रों से आखिर होगा क्या ? कैसे परिणाम आयेंगे।

ईसामसीह शस्त्रों के परिणामों को जानते थे, इसलिए उन्होंने कहा, 'जो तलवार लेगा, उसका तलवार से ही नाश होगा' आश्चर्य है कि लोग बाइबिल को मान करके भी ईसामसीह की नसीहतें भूल जाते हैं। दुनिया में बाइबिल की करोड़ों प्रतियाँ खपती हैं। बाइबिल के सिवाय दुनिया में दूसरी ऐसी कोई किताब नहीं है, जिसका तर्जुमा कम-से-कम हजार जबानों में हुआ हो, बाइबिल में अहिंसा और प्यार की बातें हैं और बाइबिल जैसा ग्रंथ पश्चिमवालों के पास है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि वहाँ अध्यात्म नहीं है। अध्यात्म तो है, लेकिन वहाँ उसपर अमल नहीं है। अभी अमल की जरूरत है।

धर्म का अमल

हमारे देश में और क्या था ? अध्यात्म की खूब ऊँची-ऊँची बातें होती थीं, लेकिन व्यवहार नहीं होता था। गांधीजी आये और उन्होंने अमल की राह बतायी, हम लोग उनके पीछे चले, इसलिए इस देश की बहुत तरक्की नहीं हुई है फिर भी हम व्याव-हारिक आध्यात्म की बातें सुनने-समझने लगे हैं। यही कारण है कि पश्चिम के लोगों को यहाँ धर्म की बातों का अमल होता हुआ दिखाई देता है।

इस तरह भारत का काम करने का जो तरीका है, उसकी बुनियाद में आध्यात्मिक चेतना काम करती है। यदि हम इस आध्यात्मिक चेतना को खोकर पश्चिम के कृत्रिम जीवन की नकल करेंगे तो हम अपनी मौलिकता खो बैठेंगे। मौलिकता खो जाने से चाहे हम कितने ही समृद्ध हो जायँ या चाहे हमारे पास अणु-बम भी हो जाय, तब भी हम अपनी ताकत और इज्जत खो बैठेंगे। इसलिए काम करने का जो भारत का अपना तरीका है और उसकी बुनियाद में जो अखलाकी ताकत है, हमें उसकी रक्षा करनी है। यदि हमारी यह ताकत मौजूद रही तो फिर दूसरी किसी समृद्धि की या शस्त्रास्त्रों की जरूरत नहीं रह जायगी। ◆◆◆

[गतांक से समाप्त]

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

जम्मू ११-९-'५९

नामस्मरण, मूर्तिपूजा आदि तो भक्ति का आरम्भमात्र है, वास्तविक भक्ति तो दरिद्रनारायण की सेवा ही है

दुनियाभर में कहा जाता है और हम लोग भी महसूस करते हैं कि हिन्दुस्तान में परमेश्वर के लिए भक्तिभाव बहुत है। वैसे तो परमात्मा को माननेवाले दुनियाभर में हैं ही याने यह किसी देश का ठीका नहीं हो सकता कि वही परमात्मा की भक्ति करे, फिर भी परमात्मा की भक्ति हिंदुस्तान की एक खुसूसियत मानी जाती है। यहाँके लोगों का रुझान परमात्मा की तरफ है। मैं मानता हूँ कि यह बात सही है। यहाँ जगह-जगह मन्दिर, गिरजाघर, गुरुद्वारा, मस्जिदें हैं। जब कोई अच्छा टीला देखा तो लोगों ने वहीं मन्दिर खड़ा कर दिया। इन सबके अलावा भी घर-घर में भगवान की भक्ति करने का रिवाज है। लेकिन आज तक भक्ति का जो रंग था, अब उसमें फ़र्क करने की जरूरत है। मैं इसी तरफ आज आप लोगों का ध्यान खींचना चाहता हूँ।

नामस्मरण भक्ति का आरंभमात्र है

अक्सर हम नामस्मरण करते हैं। यह एक अच्छी बात है। मनुष्य परेशान होता है या आफत में फँस जाता है तो उस हालत में नामस्मरण से उसे कुछ शांति मिलती है। हम मूर्ति-पूजा, ध्यान वगैरह भी करते हैं। आँख के सामने कोई ऐसी चीज़ ही कि जिसपर दिल एकाग्र हो सके तो वह भी एक फायदे की चीज़ है। मूर्ति सामने रखकर पूजा कर, ली ध्यान कर लिया, यह भी एक भक्ति ही है, पर इतने से भक्ति पूरी नहीं होती। यह उसका तो आरंभमात्र है। लोगो में अभी यह खयाल आना बाकी है। मगर अब धीरे-धीरे आ रहा है।

दरअसल भक्ति का मानी क्या है? भगवान रहते कहाँ हैं? क्या वे अमरनाथ, बद्री-केदार, काशी, रामेश्वर या जेरुसलेम या मक्का मदीना में रहते हैं? वहाँ भी रहते हैं, इसमें कोई शक नहीं है, वे सारी भगवान की ही जगहें हैं। अनेक साधु, सत्पुरुष, फकीर वहाँ यात्रा के लिए, ज़ियारत के लिए गये और उन्होंने वहाँ काफी तपस्या की है। ऐसी सब जगहों पर जाकर मनुष्य को कुछ तसल्ली मिलती है, साधु-संगति मिलती है और लाभ होता है, यह मैं कबूल करता हूँ, किन्तु हमें यह भी साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि काशी, कैलास, मक्का आदि सारी जगहें परमात्मा की खास जगहें नहीं हैं। उसकी खास जगह अगर कोई है तो वह है इन्सान का दिल। अन्तर्यामी दिल के अन्दर ही रहता है। इस बात को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई वगैरह सभी मानते हैं। लेकिन अफसोस है कि इस पर अमल नहीं करते हैं।

गरीबों की सेवा ही भगवद्भक्ति

हम इस बात को अभी तक समझे नहीं है कि परमेश्वर की सबसे बढ़कर और आसान जो पूजा, इबादत, भक्ति हम कर सकते हैं, वह है दुःखी, रोगी, गरीबों की सेवा, गिरे हुओं को मदद देना। हिंदुस्तान में कुष्ठरोगियों को सेवा अक्सर ईसाई करते हैं। ईसाई लोग दूर-दूर के देशों में जाकर सेवा करते हैं, यह उनके लिए इज्जत की चीज है। लेकिन हमारे देश के लोग अभी तक उस काम में नहीं पड़े हैं। बीमारों की सेवा में जिंदगी सर्फ करना भगवान की पूजा है, क्या यों समझकर हम उस काम को करते हैं? बहुत थोड़े लोग इस काम में लगे हैं।

हमने मेहतरों का एक ऐसा वर्ग पैदा किया है, जो सफाई करता है। हम अपना काम इतना ही समझते हैं कि घर में कचरा पड़ा हो तो रास्ते पर फेंक देना! उसे उठाना मेहतर का काम है। इन मेहतरों को हमने अछूत भी मान रखा है। दरअसल हमें समझना चाहिए कि सफाई करना याने परमेश्वर की पूजा है, सेवा है। मैंने काशी में तथा प्रयाग में गंगा के किनारे पर देखा है कि वहाँ बड़ी फजर में एक ओर तो संन्यासी सूर्योपासना कर रहा है। और दूसरी ओर उससे ३०-४० कदम पर एक मनुष्य पाखाने बैठा है। लोग नदी के किनारे को गंदा बना देते हैं। उसमें हमें ऐसा महसूस नहीं होता है कि हमने गलत काम किया। नदियों में नहाने में लोग बड़ा धर्म मानते हैं, लेकिन इस बात को नहीं समझते कि वहाँकी गंदगी को साफ करना भी धर्म है। हमें समझना चाहिए, किसी जगह को गंदा बनाना अधर्म है, भगवान के प्रति द्रोह है, ठीक इसके विपरीत गंदगी उठाना, सफाई करना, भगवान की पूजा है। याने गरीबों की सेवा करना ही दरअसल में भगवान की इबादत है।

मूर्तिपूजा के दिन लद गये

हम इस बात को नहीं समझते हैं कि अपने गाँव के गरीबों को ही मदद देना भगवान की पूजा है। अक्सर होता यह है कि हमने अपनी आँखों के सामने कहीं बहुत ज्यादा दुःख देखा तो आँखों की लाचारी की वजह से, विवश होकर दया के मारे हम कुछ दे देते हैं। उस समय क्या हम यह समझते हैं कि सामने किसी गरीब को देखा है याने हमें परमात्मा का दर्शन हुआ है? हमारे सामने भूखा, प्यासा भगवान खड़ा है। उसकी भूख और प्यास मिटाना यही है भगवान की पूजा है! वैसे हम कभी-कभी दया के काम कर लेते हैं, लेकिन नित्य पूजा की तरह क्या हम महसूस करते हैं कि हमें गाँव-गाँव घूमना है और घर-घर जाकर ढूँढ़ना है कि कौन दुःखी है, गरीब है, पीड़ित है, बीमार है और किसे मदद की ज़रूरत है? जरूरतमन्दों को मदद पहुँचाने की कोशिश करेंगे, तभी हमारे हाथ से भगवान की पूजा होगी। अब मूर्तिपूजा के दिन लद गये हैं। अभी भी हम अपनी भावना को सिर्फ मूर्ति तक सीमित रखते हैं, निठुर बनते हैं, व्यवहार में दूसरों को ठगते हैं, सूद ज्यादा लेते हैं। हम यह भी नहीं समझते कि यह भगवान का द्रोह है। आज हर चीज में मिलावट होती है। खाने की चीज में और दवा में भी मिलावट होती है। इस तरह एक तरफ तो हम ऐसी मिलावट करके चीजें बेचते हैं और दूसरी तरफ थोड़ा धर्म का काम कर लेते हैं तो दिल को तसल्ली हो जाती है।

सफेद बाजार भी काला हुआ

क्या आप समझते हैं कि ये जो सारी चीजें चल रही हैं, उनका भक्ति के साथ मेल है? इस समय कहाँ झूठ नहीं है? वकील समझते हैं कि बिना झूठ के काम नहीं चलता, राजनीतिज्ञ समझते हैं कि झूठ बोलना निहायत जरूरी है, व्यापारी कहते हैं कि मिलावट करनी ही पड़ती है, सब्जी बेचनेवाला कहता है कि

www.vinoba.in

में सब्जी चार आने सेर दूँगा और खरीदनेवाला कहता है कि दो आने सेर दो। आखिर तीन आने पर सौदा तय हो जाता है। इस चर्चा में पंद्रह मिनट चले जाते हैं। कोई बच्चा खरीदने गया तो दूकानदार चार आने के बदले १० आने में बेचेगा और समझेगा कि लूटने का यही तो मौका है। मैं काले बाजार की बात नहीं कर रहा हूँ। हिंदुस्तान का सफेद बाजार ही काला है। सफेद बाजार में भी चीज ठीक दाम में मिलेगी ही, ऐसा कोई भरोसा नहीं है। वहाँ केवल अक्ल की लड़ाई चलती है। हम बाजार में ठगे न जायँ, इसके लिए बहुत अक्ल चाहिए। यह सब चलता है और हम हैं कि महसूस ही नहीं करते कि इसका भगवान की भक्ति के साथ कोई मेल नहीं है!

सेवा या भक्ति?

हम परमेश्वर का नाम लेते हैं और लांच, रिश्वत के तौर पर उसे (परमेश्वर को) कुछ देकर फायदा उठाना चाहते हैं। किसी-पर कोई आफत आयी तो वह भगवान की मिन्नत करेगा कि यह आफत चली जायगी तो मैं बकरे की बलि दूँगा या ब्राह्मणों को भोजन कराऊँगा। यह भगवान को ठगने की बात हुई। इस तरह हम भगवान के साथ सौदा भी करते हैं। मेरे इस कहने का भाव आप यह समझ लीजिये कि हम सिर्फ मूर्ति पूजा करेंगे, बड़ी फजर उठकर नहा-धोकर चंदन लगायेंगे, ग्रंथपाठ करेंगे, मगर इतने से भक्ति नहीं होती। आसपास के दुःखी लोगों की सेवा करने की बात हमें सूझनी चाहिए। जब हम इस बात को समझेंगे कि दुःखितों की सेवा से ही भक्ति होती है, तब हमारी भक्ति का सारा जजबा (भावना) सेवा में लगेगा। आज हम भगवान का नाम लेते हैं, लेकिन उतने से दिल पाक नहीं बनता है, क्योंकि भगवान की भक्ति का असली रूप क्या है, इसे हम समझे नहीं हैं।

धर्म क्या है?

आज एक भाईने हमसे कहा, आप भूदान के काम में लगे हैं, यह ठीक है, लेकिन कुछ धार्मिक काम भी उठायें और लोगों को धर्म की बातें समझायें। मैंने उससे पूछा, धर्म का क्या माने समझते हैं आप? एक गरीब भाई है। उसके बाल-बच्चे भी हैं, परन्तु उसके निर्वाह के लिए न जमीन है, न काम का जरिया है। सिर्फ हम उसे जमीन देते हैं तो यह धर्म का काम होता है या इक्तसादी (आर्थिक) सुधार का काम होता है? सरकार हमसे टैक्स लेकर अस्पताल खोलती है, इससे उसने तो दया का काम कर लिया, लेकिन हमारी दया, धर्म बढ़ा नहीं। हम बीमार की सेवा की कोशिश करेंगे, तभी हमारा धर्म बढ़ा, ऐसा माना जायगा। जहाँ मनुष्य के गुणों का विकास होता है, वहाँ धर्म होता है। सहयोग, प्रेम, सत्यनिष्ठा, हिम्मत, दया आदि सारे सद्‌गुण बढ़ेंगे, तभी धर्म बढ़ेगा। मैं मजाक में कहा करता हूँ कि हम पत्थर की पूजा करते हैं तो हमारा दिल भी पत्थर के जैसा निष्ठुर बन जाता है। इस तरह पत्थरदिल बन जायँ, ऐसी पूजा से क्या फायदा? अगर यह अनुभव हो कि दिल नर्म बन रहा है। दिल में प्यार, रहम, मेहेर पैदा हो रही है, हिंमत, सत्यनिष्ठा बढ़ रही है, तब वह सच्ची भक्ति होगी। क्या भूदान का काम माली हालत सुधारने का ही काम है? वह काम तो सरकार करती ही है। लेकिन हम लोगों को समझाते हैं कि आपको अपने दुःखी भाइयों के लिए अपनी चीज का एक हिस्सा समझ-बूझकर, प्यार से देना चाहिए, यह धर्म नहीं तो क्या है? परमेश्वर की भक्ति के मानी आप क्या समझते हैं?

भूदान का काम भी भक्ति ही है

भगवान की भक्ति घुमा रही है या माली हालत सुधारने की बात घुमा रही है? भूदान का काम अगर माली हालत सुधारना ही होता तो मेरे जैसा बेवकूफ और कोई नहीं साबित होता, जो ऐसे काम के लिए पैदल चलता।

हम पीरपंजाल लाँघने के वक्त १३॥ हजार फीट के पहाड़ पर चढ़े थे। इस तरह अपने को खतरे में डालकर पैदल चलकर पहाड़ लाँघने की क्या जरूरत थी? क्या हम हवाई जहाज से नहीं जा सकते थे? लेकिन बाबा ने उस वक्त लोगों के सामने जाहिर किया था कि बाबा पीरपंजाल न लाँघ सका तो ईश्वर का इशारा समझकर कश्मीर न जाकर वापस पंजाब चला जायगा। फिर आपने सारा तमाशा देख ही लिया। एक दिन थोड़े ओले गिरे और बाद में दो दिनों तक आसमान बिलकुल साफ रहा। अगर वहाँ फिर ओले गिरते तो हमारे पास बचने की कोई तरकीब नहीं थी। हम मार खा जाते। ओलों की मार खाना, इतना बड़ा खतरा उठाकर पहाड़ लाँघना, सतत पैदल चलना, यह या तो भक्ति है या बेवकूफी है। अगर हम सिर्फ माली हालत सुधारने के लिए घूमते होते तो यह बेवकूफी ही मानी जाती। अगर हमारा वही मकसद होता, तब तो हम सरकार के पास जाकर उसे समझा सकते थे, व्यापार वगैरह में पड़ सकते थे या दूसरे तरीके से भी काम कर सकते थे, लेकिन पैदल-पैदल घूमना और लोगों के पास जाकर आजिज होकर कहना कि अपने भाइयों के लिए जमीन दो, भक्ति नहीं है तो क्या है?

फलाना काम भक्ति का है और फलाना भक्ति का नहीं है, इस तरह जिन्दगी के टुकड़े नहीं हो सकते हैं। प्यार से रसोई बनाकर अतिथि को खिलाना, एक बड़ा यज्ञ है। अगर हम इसे ठीक से समझे होते तो आज हिन्दुस्तान की गिरी हुई हालत नहीं होती, यहाँपर इतना लाभ नहीं होता, सफेद बाजार भी काला बाजार नहीं बनता, एक बाजू अमीरी और दूसरी बाजू गुर्बत, यह हालत नहीं रहती। अगर लोगों के दिल में सच्ची भक्ति होती तो ऐसी गुर्बत न होकर एक-दूसरे को मदद देने की वृत्ति होती। हम एक-दूसरे को मदद नहीं देते हैं। ट्रेन में खाना खाते समय पासवाले मुसाफिर की तरफ पीठ करके खाते हैं और घर में खिड़की बन्द करके। हम अपना खाना लोगों के सामने खा नहीं सकते हैं। क्योंकि किसीके नजर लग जाने का डर रहता है। लेकिन क्या बच्चा खाना खाता है तो माँ की नजर लगती है या माँ खाती है तो बच्चे की नजर लगती है? माँ बच्चे को प्यार करती है और उसे खिलाकर फिर खाती है। लेकिन एक हम हैं, जो हमारे इर्द-गिर्द रहनेवाले भूखे लोगों की पर्वाह किये बिना ही खाना खाते हैं। इसलिए उनकी आसक्ति की नजर लगती है।

भक्ति या नासमझी?

एक ओर तो हमारा दिल निठुर बना है और दूसरी ओर भक्ति, नामस्मरण, पूजा, पाठ, यात्रा चलती है। मैं यह नहीं कहता हूँ कि यह सारा ढोंग चल रहा है। इसमें भी अच्छाई, भलाई हो सकती है। लेकिन ऐसा करनेवाले लोग समझे नहीं कि भक्ति क्या चीज है? हजारों लोग अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हैं। उनमें सब ढोंगी नहीं हैं, लेकिन वे समझे नहीं हैं। वे सोचते नहीं कि यात्रा के समय जिन मजदूरों को साथ ले जाते हैं, उनकी क्या हालत है? उस हालत को सुधारने के लिए कुछ भी कोशिश नहीं करते हैं, किन्तु वहाँ जाकर बर्फ का लिंगाकार दर्शन होता है तो मान लेते हैं कि दर्शन हो गया। क्या दर्शन

www.vinoba.in

हुआ ? मजदूरों के वास्ते कुछ रहम पैदा हुई ? अगर मुझे यकीन होता कि हिन्दुस्तान में भक्ति के नाम पर ढोंग चल रहा है तो अपने देश की तरक्की के बारे में मैं मायूस हो जाता। लेकिन यह ढोंग नहीं, बल्कि नासमझी है। अगर लोग समझते कि भक्ति क्या है, तब तो देश का नक्शा ही बदल जाता।

धर्म का मूल्य

लोग बड़ी श्रद्धा से यात्रा करेंगे, उसके लिए पैसा खर्च करेंगे, लेकिन उन्हें ही खादी पहनने को कहा जाय तो वे कहेंगे कि खादी महँगी है। जरा सोचिये तो अगर आप सालभर में मिल का कपड़ा खरीदते हैं तो दस रुपये में मिलता है और खादी खरीदते हैं तो बीस रुपये में। जो दस रुपया ज्यादा खर्च हुआ, वह धर्म के काम में खर्च हुआ, ऐसा क्यों नहीं समझते ? तुम अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हो, उसमें पचास रुपये खर्च करते हो और उसे धर्म मानते हो। लेकिन आपके गाँव की एक गरीब औरत चर्खा कातती है, उसे घर बैठे रोजी मिलती है, उसके बच्चों को खाना मिलता है तो उसके सूत की बनी हुई महँगी खादी खरीदने में आप धर्म क्यों नहीं समझते ? भाइयो, मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि आप इतनी बात भी नहीं समझते तो दूसरे कामों में पैसा खर्च करने से धर्म कैसे हो जायगा ? एक भाई बिहार से अमरनाथ की यात्रा के लिए आया तो उसने रेलवे को पैसा दिया और यहाँ आकर होटलवाले को भी दिया। फिर घोड़े पर बैठकर अमरनाथ गया। उसका सारा सबाब (पुण्य) तो घोड़े ने ही खा लिया। अगर वह अमरनाथ पैदल जाता, तब तो दूसरी बात थी। लेकिन ट्रेन में, मोटर में, घोड़े पर या गधे पर बैठकर जाने में क्या धर्म है ? आप खादी नहीं खरीदोगे तो गाँव की गरीब औरत और उसके बच्चे भूखों मरेंगे। इसलिए क्या खादी खरीदने में धर्म नहीं है ?

गरीबों को तसल्ली दें

मैंने सोचा कि मैं कल यहाँसे जाऊँगा और पता नहीं दुबारा कब आ सकूँगा। इसलिए अपने हृदय की बात आपके सामने रखूँ और भगवान से प्रार्थना करूँ कि वह आपको प्रेरणा दे कि आपके पास जो अपनी ताकत है, उसे आप दुःखितों की सेवा में, दुःख-निवारण में लगायें, जो सच्ची भक्ति है। श्रद्धा, तीर्थयात्रा वगैरह सब छोटी चीजें हैं। वह आप न करें तो भी कोई पर्वाह नहीं है। लेकिन गरीबों के, दुःखियों के दिल को तसल्ली देने का काम आपको करना चाहिए। आपकी दौलत, जमीन, अक्ल, वक्त, इल्म, सब आपको दुःखियों की सेवा में लगाना चाहिए। यह प्रेरणा देकर और भूदान ग्रामदान का काम सिर्फ माली हालत सुधारने का काम नहीं है, बल्कि यह तो हिन्दुस्तान में धर्म-स्थापना करने का, देश को सच्ची भक्ति सिखाने का काम चल रहा है—यह आपको समझाकर मैं आपसे बिदा ले रहा हूँ। 'जय जगत्'। ◆◆◆

प्रश्नोत्तर

गलत विचार से बचने का उपाय

प्रश्न—हम सब अपनी गलतियाँ महसूस करते हैं, परन्तु उन्हें सुधार नहीं पाते। हमसे यह ज्ञानपाप क्यों होता है ?

उत्तर—यही प्रश्न अर्जुन ने भगवान से पूछा था। मेरा खयाल है कि जिनमें जो ज्ञान है, वह वास्तव में ज्ञान नहीं है, याने स्पष्ट ज्ञान नहीं है। स्पष्ट ज्ञान हो तो सामने अंधकार टिक नहीं सकता है। "शायद कुछ बिगड़ा है" ऐसा हमें लगता है। याने इसमें 'शायद' है, स्पष्ट ज्ञान नहीं है। जब तक हम बुनियादी चीज को नहीं समझते हैं, तब तक स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। बुनियादी चीज है ब्रह्मविद्या।

मैं और आप अलग हैं, इस विचार में जो अलगाव है, वह देह के कारण है, गलत है। उसीके कारण संकोच और भय पैदा होता है। वह अलगाव ही न रहे और हम सब एक हैं, इसका भान हो तो अंधकार मिट जाता है। आजकल चवथी बीमा की बात की जाती है और कहा जाता है कि वह सबको जोड़नेवाली चीज है, यह माना तो भी हम और आप अलग ही हैं, ऐसा कहा जायगा। इसलिए हम एक ही हैं, इसको समझना होगा। हमारे मन में कोई चीज आयी और हम चाहे उसे प्रकट न करें तो भी वह चीज फैलती है। अभी हमें इतना एहसास नहीं हुआ है कि जब कभी हमने मन में विचार किया, तब वह फेल हो जायगा। परन्तु विचार आगे बढ़ेगा तो मन में जो सारा चलता है, उसका भी रेकार्ड करने का यंत्र हमारे हाथ आयेगा। विज्ञान की जो प्रगति हो रही है, उसपर से मुझे लगता है कि यह भी संभव होगा। आज आप मेरा शब्द पकड़ सकते हैं। आपने रेकार्ड कर लिया तो फिर मैं इन्कार नहीं कर सकता हूँ कि मैंने फलानी चीज नहीं कही। लेकिन आज मेरे मन में क्या चल रहा है, इसको पकड़ने की युक्ति हाथ नहीं आयी है, फिर भी कल हाथ में आयेगी। इसलिए चित्त में कोई भी गलत विचार न आये, ऐसी किसी मनुष्य की शक्ति हुई तो वह दुनिया को बचा सकता है।

बापू ने कहा था कि एक भी शुद्ध सत्याग्रही हो तो वह सारी दुनिया को बचा सकता है। वह बिलकुल मिस्टिक (गूढ़) चीज मालूम होती है, परन्तु वह सही है। हमारे मन में कोई विचार आये तो हम उसे इस खयाल से छिपाते हैं कि हम सोचते हैं कि हम उसे छिपा सकते हैं, लेकिन जब यह ध्यान में आयेगा कि मन में विचार आया तो उसे छिपा ही नहीं सकते हैं, तब हम उसे प्रकट करेंगे। आज हमें लगता है कि बोलने से मामला बिगड़ जायगा, इसलिए हम बोलते नहीं, विचार मन में ही रखते हैं। लेकिन जब यह ध्यान में आयेगा कि कोई गलत विचार मन में आया तो ज्यादा बिगड़ा, बोलसे शायद थोड़ा सुधरेगा, तब हम बोलेंगे और फिर उसकी भी कोशिश करेंगे कि कोई गलत विचार मन में ही न आये। ◆★◆

अनुक्रम

१. भारत का काम करने का अपना एक तरीका है !
कटरा ६ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६८३
२. नामस्मरण, मूर्तिपूजा आदि तो भक्ति का आरंभमात्र है....
जम्मू ११ सितम्बर '५९ " ६८४
३. गलत विचार से बचने का उपाय, (प्रश्नोत्तर) " ६८६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी